

स्नेहक पुं. (तत्.) 1. मशीन आदि के पुर्जों को आसानी से चलने में मदद देने वाला चिकना पदार्थ 2. प्रेमी, स्नेही।

स्नेहन पुं. (तत्.) 1. किसी चीज को चिकना करने की क्रिया या भाव, किसी चीज में स्नेह/तेल लगाना 2. मशीन आदि के यंत्रों में तेल डालना 3. शरीर में तेल लगाना 4. मक्खन, नवनीत 5. कफ।

स्नेहनीय वि. (तत्.) 1. जिस पर तेल लगाया जा सके 2. जिसके साथ स्नेह किया जा सके।

स्नेहपात्र वि. (तत्.) जो स्नेह का पात्र हो, जिसके प्रति स्नेह हो स्त्री. स्नेहपात्री।

स्नेहपान पुं. (तत्.) 1. तेल पीना 2. कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीने की एक प्रकार की क्रिया। (वैद्यक के अनुसार)।

स्नेह-प्रवृत्ति स्त्री. (तत्.) प्रेम, स्नेह।

स्नेह प्रिय वि. (तत्.) 1. जिसे तेल अधिक प्रिय हो 2. दीपक।

स्नेह-फल पुं. (तत्.) तिल।

स्नेह-बीज पुं. (तत्.) चिरौंजी।

स्नेह-भंग पुं. (तत्.) प्रेम का भंग हो जाना।

स्नेह-मापक पुं. (तत्.) वह यंत्र जिससे यह पता चले/मापा जाए कि दूध में मक्खन, घी आदि का अंश (चिकनाई) कितना है।

स्नेहमीन पुं. (तत्.) एक प्रकार की बड़ी समुद्री मछली जिसकी चरबी का उपयोग विभिन्न प्रकार के रोगों में पौष्टिक ओषधि के रूप में होता है और उस मछली का माँस खाया भी जाता है।

स्नेहल वि. (तत्.) 1. प्रेमपूर्ण, स्नेहपूर्ण 2. कोमल हृदय 3. चिकना।

स्नेहवस्ति स्त्री. (तत्.) पिचकारी में तेल भर कर गुदा के द्वारा रोगी के शरीर में डालने की क्रिया।

स्नेह-वृक्ष पुं. (तत्.) देवदारु।

स्नेह सार पुं. (तत्.) मज्जा नामक धातु, अस्थिसार।

स्नेहांश पुं. (तत्.) दीपक, चिराग।

स्नेहाक्त वि. (तत्.) 1. जिसमें तेल दिया गया हो 2. तेल से चिकनाया हुआ।

स्नेहानुवृत्ति स्त्री. (तत्.) 1. स्नेह-भाव 2. मित्रता, मैत्री-भाव।

स्नेहिक वि. (तत्.) 1. स्नेह युक्त, चिकना 2. रोगनदार।

स्नेहित वि. (तत्.) 1. स्नेह से युक्त किया हुआ 2. जिससे कोई स्नेह करता हो, जिसे किसी का स्नेह प्राप्त हो 3. तेल लगाया हो 4. चिकनाया हो।

स्नेहिनी स्त्री./वि. (तत्.) दे. स्नेही।

स्नेहिल वि. (तत्.) 1. स्नेहयुक्त 2. स्नेही।

स्नेही वि. (तत्.) 1. जो स्नेह करता हो, प्रेमयुक्त, प्रेमी 2. जिससे स्नेह किया जाता हो, स्नेह-प्राप्त, प्रिय, प्यारा 3. जिस पर तेल, घी आदि की चिकनाई लगाई गई हो, चिकनाया हुआ पुं. 1 प्रेमी 2. मित्र 3. प्रिय व्यक्ति 4. लेप आदि लगाने वाला चिकित्सक 5. चित्रकार।

स्नेहोत्तम पुं. (तत्.) तिल का तेल।

स्नेहय वि. (तत्.) स्नेह के योग्य, जिसके साथ स्नेह किया जा सके, स्नेह का अधिकारी/पात्र।

स्पंज पुं. (अर.) 1. एक छिद्रयुक्त जल-जंतु 2. इस जल-जंतु का पंजर (जो जल सोखने के काम आता है) 3. जल-शोषक गद्दी।

स्पंजी वि. (अर.) स्पंज की भाँति छिद्रिल।

स्पंद पुं. (तत्.) 1. रुक-रुककर और धीरे-धीरे हिलना या काँपना, मंद कंपन 2. अंगों आदि का फड़काना 3. धीमी-धीमी गति।

स्पंदन पुं. (तत्.) 1. रह-रहकर और धीरे-धीरे हिलना या काँपना 2. हृदय या नाड़ी की धड़कन 3 धीमी-धीमी गति जैसे- जीवन का स्पंदन।